

Also supply in high grade Machine made Envelopes,
Writing Pads, Notepapers, Fancy Invitation Cards,
Exercise Books, Drawing Books, Graph Books, A/c
Books and all sorts of Paper Stationeries.

Obtainable from all leading Stationers.

निकरूपजा

Selling Agents:

BHOLANATH DUTT & SONS,

PAPER MERCHANTS

"BHOLANATH BUILDINGS"

167, Old Chinabazar, Calcutta



DUTT PRINTING WORKS, 4 David Joseph Lane, Calcutta.

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

1911 THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

THE UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS

9	99	29	39	89	49	69	79	89	99
2	92	22	32	82	42	62	72	82	92
3	93	23	33	83	43	63	73	83	93
8	98	28	38	88	48	68	78	88	98
4	94	24	34	84	44	64	74	84	94
6	96	26	36	86	46	66	76	86	96
7	97	27	37	87	47	67	77	87	97
8	98	28	38	88	48	68	78	88	98
9	99	29	39	89	49	69	79	89	99
0	00	30	40	90	50	70	80	90	00

वज्रसूत्र १

अथ वज्रसूत्रः प्रिलवर्द्ध देव ॥ इति यद्वज्र
ध्वजगः वज्रं द्यौषधं ध्वजं ॥ अथ वज्र
सूत्रं समाप्तं ॥

गंगा ० गाङ्गा तु तु ॥

अथास्मिन् ह्यलम्पनाथं प्रकाशयन्
मीध ॥ दानं सिञ्चयन् कृपायु समन ॥ वि

अध्वनसं मागर्ग ॥ ॥ दध्वगर्ग ॥ २

अथास्मिन् ह्यलम्पनाथं प्रकाशयन्
वर्तुल्लवर्द्ध ध्वजः उठामकूतं ध्वजिगा ॥ २ ॥

अथास्मिन् ह्यलम्पनाथं प्रकाशयन्
इति यद्वज्रध्वजनी ॥ उगाङ्गा न स्वर्गीगा ॥

दध्वगर्ग ३ ॥ दध्वगर्ग ४ ॥

श्रीसूर्यरश्मिधनुं ॥ लोकाचार्यजोष ॥
पंचवृक्षसकं दिगं स्थितं ॥ चतुर्विधा
जादवी समजलं ॥ ~~डिं धा धा प~~
श्रीहृत्नाहललोकस्थलः प्रकवर्णस्व
रितं ॥ खठसुखधजलः मृतयदान
न ॥ उठामकृमिताह श्वरावर्क ॥
~~डिं गिंदं धा ग ५५~~ ॥

श्रीश्वभपजोषस्थलः प्रकवर्णदय ॥ इ
तियरुजधजल ॥ उठामकृमिताह ॥
~~ताहताः ताहृदु ॥~~
जागद्वेषनिडिगुधनः देवदानवशु
ल ॥ नमामि श्रीकृष्णपालदयसमजने ॥
डिं धा धा ॥ १ ॥

सिंहनादलोकाञ्जः शुक्लवर्णः ॥
याद्युचर्मइति यत्तु ॥ ज्ञातुली
लयाशुतः देवदेव ॥ सर्वसत्त्वतः ॥
नीः ॥ सिंहनाद ॥ ॥ जिगीनजीगी ॥ ८ ॥

विष्णुश्च लषठ रिङ्गः विष्णुश्च वि
नायक ॥ विष्णुश्च सिद्धिदाता ॥ बल

रुलमाक सीपुल ॥ ॥ गङ्गागाङ्गाङ्गा ॥
शुपुर्ननयनाथः लोकेश्वरकवर्णः ॥
गङ्गादेव गङ्गापुर्ननाथनी ॥ ज्ञान
कृतल्लर्कलुली ॥ ॥ दक्षिण ॥ १० ॥

पञ्चावधधर्मधनुः वाग्विश्वदेव ॥ स
र्वसत्त्वपुका गङ्गाः शुधर्मधनुः ॥
किं धर्मधनुः ११ ॥

ॐ ह लिहलवाहनः लोक जलदेव ॥ ९०
न ह नीगजक वल्लदेव ॥ गत्रु नाग
आ भाने धापीगं ॥ ॥ गल्लुइ नारवता ॥ ९२
ॐ गिलोक व भंकलः लोक जलरूप ॥
जक वल्लुइ गियरुजः जगामकूटध
जली ॥ ॥ ठिदिदं ॥ ९३

पंचवधात्मकः धर्मधनुस्वर्यरु ॥ लो
कमूर्ति लोकनाथ ॥ हात्र तिदवी आ
गमने ॥ ॥ ठिदिदं ॥ ९४

ॐ जकलोक जगदयः जक वल्लु चतुस्र
ज ॥ जगामकूट जल्लु लः जलिनं ॥
॥ ताकिनीनीद ॥ ९५

बंद श्री मे उिय बाधि सत्व जाऊ ॥ सकल
बाधि जाऊ मागु ॥ ॥ ग कि नी की र्द ॥ १५५
श्री माया जाल लाक भल ॥ निलव लूद
वः द्याद भएज ॥ ज ठाम कूत खराः कू
लुल सहिगा ॥ ॥ र्द ग ल र्द धा १ ११
विश्व भल विश्वः विश्व नृप विनायक ॥

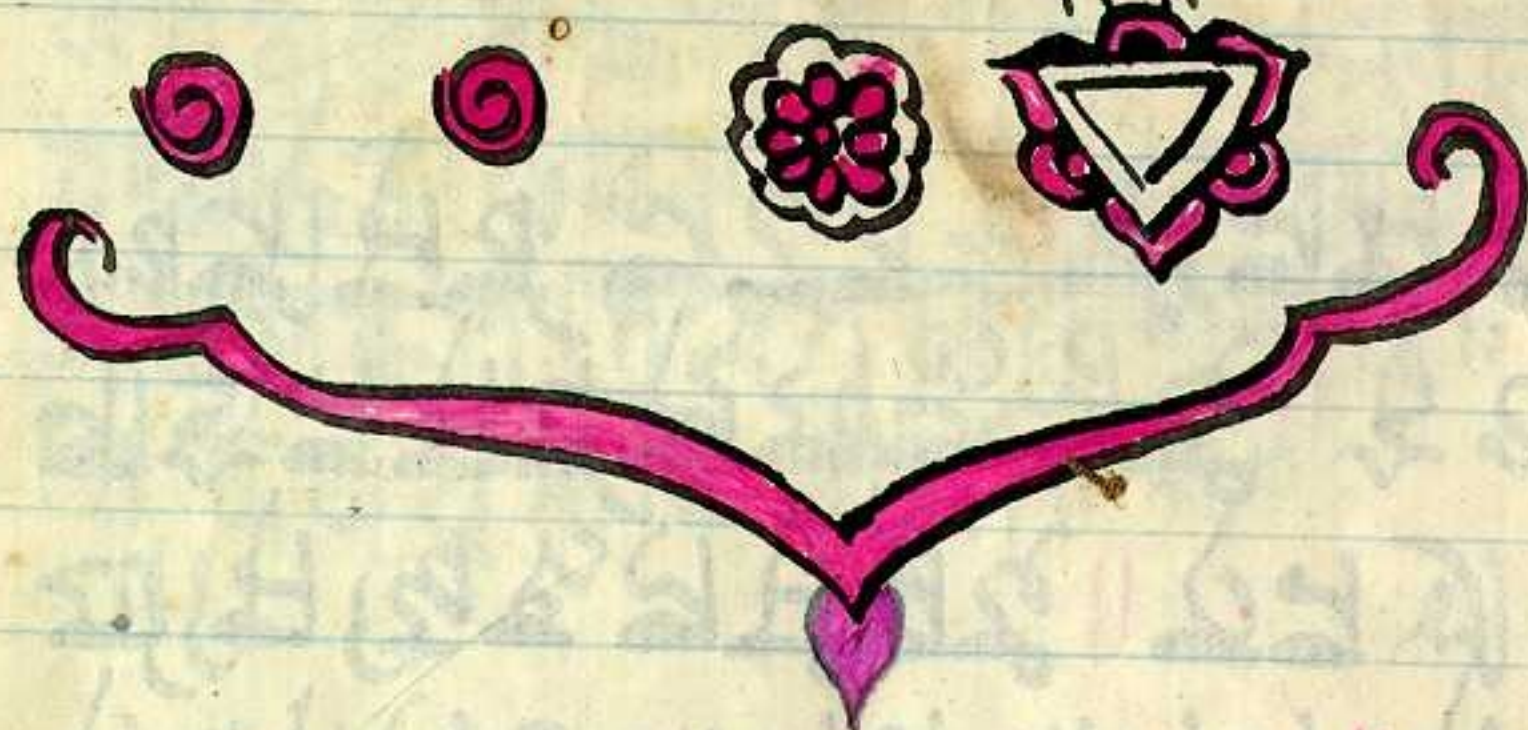
विश्व मूर्ति लकनः श्री नल बाहनी ॥
ग कि नी कि र्द ॥ १८ ॥
श्री निल कं ० लाक भल ॥ पितय लूच
उएज ॥ नल कू लुल ज ठाम कूत ॥ श्री
लोका भल ॥ ॥ जि गी न जि गी ॥ १९

खन कला जाक जलः प्रक वल स्वरा ॥ ख
न वल इति यरु ॥ न धा ग क व धन ॥
उ ठा म क न नि न तु स्वरी न द ये ॥
नि कि दं दं ता कि नी नी ॥ २०

काली जल ल

दान पति या सर्व मा ल विद्यु नि वा न ल
सर्व सत्य उ धा न न काम न ॥ सर्व का
र्य सि धि रु ल संपु र्द ॥ ए न श्री सि धी
जा उ न सर्व सुख रु ल द ॥ हे देवी ॐ
ज्योती सर्व ल देव देवी नमः ॥ ॥

॥ राट ॥ अपि ॥ चित्ता ॥ सुकदा ॥



गुरुमदल

गुरु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ धनं कुरु मानसा

॥ कर्माचार्यक ॥ ह्रीं कर्मलजिह्वां प्रसाहा ॥ हृदयसा

हा ॥ हिंसाहा ॥ कायविषयधनसाहा ॥ पादप्रकाशन

साहा ॥ श्रीकृष्णार्पणं नमः ॥ पूजार्थीयक ॥ ४

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गुरुभ्यः पूज्यमाहा पूज्य

हृदयसंभारकसर्वधनय ॥ तद्यथाः पूज्यमाहा पूज्य

सपूज्यः पूज्यविकारकमनपूज्यायकजनकसाहा ॥

दानपुतिजजमानस्यनपालमंदनगतलगतनली

गपुत्रायामानीगमनागम ॥ ना ॥ नामनाया ॥

सकलपञ्चवालकस्य सजीवाय जागृता सुखे च
 यदि सुररुतसंघादिकामनाया ॥ स्वसजीलस
 र्यजागनिवात्रलभं ॥ तस्मिदिन ॥ * सि ॥
 नामदङ्गागतस्य इति निवात्रलभं ॥ सलगति
 सुररुतसंघावतिकामर्थ ॥ श्रीसूर्यरूपमर्ष
 तुवागीष्वल ॥ श्रीनन्दवात्रनीवेष्टननाय
 वाहनाग ॥ उभसंघापचापे चालपूजा कृया क
 र्मनिः ॥ दृष्ट्या हाउननमस्तु काम्यहं ॥ नडाङ्गा
 नाकाय ॥ जाकिङ्गा नाहाकलपंचान ॥ ॐ गुरुवन्द्य

गुरुधर्मः गुरुसंघं नये वच ॥ गुरुवर्जधलये
 वगुरुसर्वं नमाम्यहं ॥ ननजाकि ॥ हानजाकि जा
 ने ॥ वन्दे श्रीवत्सल्यरुवनवत्तु गुरुसर्ववन्द्यरुव
 तु ॥ नाना रूपनत्यनतिमीलरुयहलः निमित्तं मत्र
 संसिर्गः ॥ धर्माधर्मनिनाजिनवलसगर्गः मंदले
 वत्तु ॥ सवनिन्दक रूपं सहजसुखमयदहिनामा
 कुरुतु ॥ [REDACTED] ॥ लपलपूजायाय ॥ ॐ श्रीगुरुग्रा
 हावचं जादक मंगरुवतु स्वाहा ॥ सिंहलंजिक ॥ वत्र
 लयवन्दनम ॥ स्नानाय ॥ पूष्यं नम ॥ जाकिपूजायाय ॥

ॐ नागपा भम कानिष्णं उलगा जामा हा वलः निर्विक
 ल्य नमस्तुभ्यं वत्स य नमस्तुभ्य ॥ विराजस नानया
 य ॥ ॐ यत्तमं गलं सकल सत्यं हृदयितं स
 सिना स्वां कृद्वृद्धं केन ॥ ॐ पुनि विन्तु समाधमशि
 र्या सुखं हि जा विजा श्रुय यत्तु नृनके प्राचरुतु कर्म
 समं गरावं ॥ कृषिष्य क काय ॥ कृषिष्य क मा हा वत्स
 नैष्य तु क नमस्तु कर्तु ददामी सर्वं वक्षनां त्रिक कालं च
 संरुव ॥ धनं धनं कन ॥ रगय न गी म न गी गी स य र

धर्मं धनु वागी गल ॥ शानं द वा जनी वै धन न रा य व
 उधर्प निष्ठा सिम्ल न या म्यहं ॥ आप या य ॥ १० काय
 वागु ॥ ॐ ई गी हि रवं सा हा ॥ २१ स र व स ध क याः
 प्रा या दि न य आ किल र ॥ गी म न गी धर्म धनु वागी
 गल शानं द वा जनी वै धन न रा य प्रा या च म नार्थ पु नि
 क स्वा हा ॥ सान वा य ॥ ॐ शाय वि जा च ना य स्वा हा ॥
 कृष्ण ला य स्वा हा ॥ जल स र वा य स्वा हा ॥ कृमि ना ला य
 स्वा हा ॥ कृमा य सिद्ध स्वा हा ॥ ना च ना य स्वा हा ॥ माम कि
 य स्वा हा ॥ प्री दु ना य स्वा हा ॥ शाय ना ना य वत्स पु षी पु नि क
 स्वा हा ॥ ॥

स्वादयान् ॥ ॐ शानंदाय स्वाहा ॥ चलमानंदाय स्वाहा ॥
 सहजानंदाय स्वाहा ॥ विलमानंदस्वाहा ॥ वडपूष्य
 पुनिक स्वाहा ॥ अपिंयान् ॥ ॐ हसं पपि आय स्वाहा ॥
 अंदियानपि आय स्वाहा ॥ जालंधलपि आय स्वाहा ॥
 निवानचक्राय स्वाहा ॥ सीरागचक्राय स्वाहा ॥ माहास
 रचक्राय स्वाहा ॥ वडपूष्यपुनिक स्वाहा ॥ सूकदायान् ॥
 ॐ वेण्मन गाय स्वाहा ॥ मानीरुदाय स्वाहा ॥ पूरुदाय स्वाहा ॥
 धनंदाय स्वाहा ॥ वडपूष्यपुनिक स्वाहा ॥ सिंहुलनिक ॥

ॐ वडगिं स्वाहा ॥ वडसिंधुजाजाय स्वाहा ॥ वडधूप
 स्वाहा ॥ वडदिप स्वाहा ॥ वडदगमजाय वडपूष्यपु
 निक स्वाहा ॥ उकाकायाय ॥ स्वानतय ॥ धनस्म
 यकाय ॥ नैव यंसर्वसंशुक्तं स्वादराय स्मदितं ॥ न
 सलसा अभिगानीददामी पलमंपुदाः पंचवल्हस्म
 यावायः मगुस्यादिस्मदितं निर्विकल्पकचिगानीरु
 जरुजई ॥ ॐ जाः ॥ ॐ कावाकाय ॥ ईकालपलमंदवः
 ईकालसिद्धिराजनः ईकालरुप्यगुचव ईकालायीतु
 नमस्तु ॥ मगविय ॥ दिपायांसर्वदिष्यातं दिपकाला

संभूतं प्रहं अथयामिपुस्तमं सर्वज्ञानप्रसिद्धय ॥ अस
 कलपात्रागतदिपदानं संपु अथयामिहं ॥ वज्रसत्यकाय ॥
 आकिजा नागागुयाय ॥ ॐ नमस्तु पंचव अनां नृका एषा
 दि कूलंगयम अथेयाय न नाथः पंचव द नमस्तु ॥
 एषा देयाय ॥ ॐ नानंदपुलमानंद सहजानंद नृपिनीः
 वत्सालदिग विगादयी नमामि दकिनी नमः ॥ अथि
 याय ॥ ॐ निलनिलाऊनी जालः नृकार्य सद्यसंघिनी
 हृष्टा हं त्यामहं वाच नृकायारवमामकि ॥ सुकृपायाम ॥
 ॐ नृजसंवेजसंआगं वेन वरुम हाकलं ॥ वं न

प्रमहं वंदः सर्वसंपूर्णिदायकं ॥ ॥ पंचराक
 पूजायाक ॥ सर्वसियां कि उवगनक ॥ ॐ नमो अय ॥ गुरु
 वनमाधमयिः तात्रनी नमा सद्यायः महत्तम ॐ जाई ग्राम
 वज्रसत्यगुरु चवनक मत्राय ॥ नमस्तु कृष्ण नावरासन
 कजाय नमाहं नमस्तु नमामि नमानम ॥ ए कृष्ण हं त्यानम
 सामिः गुरुनाथं प्रसिद्धय ॥ यस्य पु मादक जनः सद्गती
 कागम तत्त्व तत्प्रपरायाः पत्रिकूल परगांधकात्रापस्यची
 नाविलधनिसद्गताः समवेतसे नमस्तु नत्रयः गुरुग
 लजाय ॥ गुरुपिसगतं नमः सर्ववृद्ध नमस्तु सामिधमसि

पणियउमानस्यः नेपालमंलु लजलीगापलमाहान
 गलवसिउग मकवम ॥ ना ॥ नामनायाः सकल
 उनपजीवालकस्य मजीगाय जालागः सुखे मया
 दिसुररुलसंप्र पि कामनाथं ॥ तस्मिंदिन ॥ सि ॥
 नामदडागतस्य उ गतिनिवाज मथं सलगति सु
 रुलसंप्र पि कामन ॥ शास्त्रयैरु म म भुवाग
 मलः मानेन वाजनी ये मन जाय शवाह नाग ॥
 तस्मिंदिन स्वक माच नाथं ॥ पंचाउ चाल पूजा क

या कर्मनः गुरुगि मः पुष्य पदिप ग मत्र सप
 जीपनाथं ॥ रावहि नर गति हि नं कृत्या हि नं कमस
 पलम मल पलम मल ॥ नन स सिंया ॥
 धन गुज पूजा या क ॥ यिगल द क ना ग य क म ॥ ३
 मया ग स म क्राय ॥ दानपति काउऊ मान नेपाल
 मंदल जलि गा पूय माहान गलव धिग म क व स ॥
 नामनायां ॥ उ पासा सागुरुल संप्र पि कामनाथं ॥
 तस्मिंदिन स्वक माच नाथं पंचाउ चाल पूजा कृत्या
 कर्मनिः वजा वाय्य गा वल द क ना दानं संप्र द ॥ ४

~~अभिज्ञानाज्ञाप~~ ॥ ॐ वज्रसत्त्वसमयमन्त्रपात्रयवर्ज
 सत्त्वमन्त्राणि ॥ ॐ मन्त्रवः सासुगमन्त्रवः सृष्टामन्त्रवः
 कर्तृकमन्त्रवः सर्वसिद्धिमन्त्रयः ॥ सर्वकर्मसु
 षमवीगः ॥ गीयं कुरु ॐ हुरुहारा गवन्नवर्जमा
 मं ॥ मन्त्रवर्जितवमाहास्यसत्त्व ॥ सा न को कायची
 लोकागुरुर्द ॥ सकृत्सिगसिद्धिनि के सा न विद्य ॥
 तपत्रीजहाना विद्यदसा ॥ ॥ मन्त्रायाः ॥
 वस्तुप्रज्ञाज्ञानाकाय ॥ ॥ पंचाक्षरकाय ॥

स्यकाय ॥ लोका नयाय ॥ धृं कालर्क्षिवाल्काय ॥
 ॐ वस्तुप्रज्ञाज्ञानाकाय ॥ साधना
 पायकादयी ॥ लक्ष्मियनमस्तु ॥ आयुर्वधीकु
 म्बवधी विधीपुष्पासुखनधः ॥ आयुः कायागधनक
 नगुनसंमानसंगुणसफवधीजस्तु ॥

पुस्तकसंग्रह

३

महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई
महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई
महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई
महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई

महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई
महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई
महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई
महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई

महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई
महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई

DRINK HALLS

W 15 14 12 11 10 9

ЭНЕРГЕТИКА И ПРОМЫШЛЕННОСТЬ

SUPPORT INDIAN INDUSTRY

USE

WHEEL



BRAND



STATIONERIES

MADE BY

STANDARD STATIONERY MANUFACTURERS LTD.

CALCUTTA.